



भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2026-2027)

कक्षा - 9	विषय – हिंदी (पाठ्यक्रम-ब) पाठ्यपुस्तक – गंगा	Date – 04.10.26
प्रश्न बैंक	पाठ: आखिरी चट्टान तक लेखक – मोहन राकेश	Note: Pl. file in portfolio

नाम : _____ अनुभाग : _____ अनुक्रमांक : _____ दिनांक: _____

प्रश्नों के उत्तर 35-40 शब्दों में दीजिए-

1. लेखक सैंड हिल से आगे दूसरे टीलों की ओर क्यों बढ़ता गया?

उत्तर: लेखक सैंड हिल से सूर्यास्त का पूरा दृश्य नहीं देख पा रहा था। सामने एक ऊँचा टीला दृश्य को रोक रहा था। इसलिए वह एक के बाद एक कई टीलों को पार करता गया, ताकि पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार दिखाई दे सके।

2. लेखक ने सूर्यास्त के समय रेत के रंगों में क्या परिवर्तन देखा?

उत्तर: सूर्यास्त के समय रेत सुनहरी दिखाई देने लगी। सूर्य डूबते ही सुनहरा रंग लाल, फिर बैंगनी और अंत में काला पड़ गया। बदलते रंगों ने लेखक के मन में आश्चर्य, सिहरन और हल्की उदासी उत्पन्न कर दी।

3. अँधेरा होने पर लेखक के मन में कौन-सा भय उत्पन्न हुआ?

उत्तर: अँधेरा बढ़ने पर लेखक को वापस लौटने की चिंता होने लगी। उसे डर था कि वह रेत के टीलों के बीच रास्ता भटक सकता है। इसलिए उसने सुरक्षित रास्ता चुनकर नीचे समुद्र-तट की ओर उतरने का निर्णय लिया।

4. समुद्र-तट पर पहुँचकर लेखक ने रेत के बारे में क्या अनुभव किया?

उत्तर: समुद्र-तट की रेत लेखक को अत्यंत आकर्षक और अनोखी लगी। उसमें खाकी, पीले, लाल तथा अनेक मिश्रित रंग दिखाई दिए। लेखक ने अलग-अलग रंगों की रेत को हाथ में लेकर देखा और उन्हें अपने पास रखने की इच्छा की।

5. लेखक को समुद्र-तट पर अचानक खतरे का एहसास क्यों हुआ?

उत्तर: समुद्र का पानी लगातार बढ़ रहा था और तट की चौड़ाई कम होती जा रही थी। लहरें लेखक के पैरों तक पहुँचने लगी थीं। आगे जाने का रास्ता भी कठिन था, इसलिए उसे लगा कि यदि वह जल्दी नहीं चला तो पानी उसे घेर सकता है।

6. कन्याकुमारी के स्थानीय शिक्षित युवकों की क्या समस्या थी?

उत्तर: कन्याकुमारी में अनेक शिक्षित युवक बेरोज़गार थे। उनमें कई स्नातक भी थे। उनका मुख्य काम नौकरी के लिए आवेदन करना और आपस में बहस करना था। कुछ युवक फोटो-एल्बम तथा अन्य छोटी वस्तुएँ बेचकर अपना जीवन चला रहे थे।

प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों में दीजिए-

1. 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर: 'आखिरी चट्टान तक' में समुद्र, चट्टानों, लहरों, रेत, आकाश और सूर्यास्त का अत्यंत सजीव चित्रण है। लेखक ने लहरों की गति, रेत के बदलते रंग और डूबते सूर्य के अद्भुत दृश्य को अपनी अनुभूतियों से जोड़ा है। प्रकृति की भव्यता के साथ विस्मय, रोमांच, भय और आत्मचेतना जैसी भावनाएँ भी उभरती हैं।

2. लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति कैसे प्रकट होती है?

उत्तर: लेखक कठिन परिस्थितियों में भी प्रयास करना नहीं छोड़ता। सूर्यास्त का पूरा दृश्य देखने के लिए वह थकान के बावजूद एक के बाद एक कई रेत के टीलों को पार करता है। बाद में समुद्र का पानी बढ़ने और अँधेरा होने पर भी वह घबराकर रुकता नहीं, बल्कि सुरक्षित रास्ता खोजकर आगे बढ़ता है।

3. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के जीवन की कौन-सी विशेषताएँ बताई हैं?

उत्तर: लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय जीवन में धार्मिक परंपराओं, पर्यटन और रोज़गार की समस्याओं को देखा। मंदिर में पूजा करने वाले भक्त, यात्रियों को शंख-मालाएँ बेचने वाली युवतियाँ और फोटो-एल्बम बेचने वाले युवक दिखाई देते हैं। साथ ही, कई शिक्षित युवक बेरोज़गार हैं और छोटे-मोटे काम करके जीवनयापन करते हैं।

4. 'आखिरी चट्टान तक' केवल स्थान-चित्रण न होकर आत्मानुभूति का यात्रा-वृत्तांत कैसे है?

उत्तर: लेखक ने केवल कन्याकुमारी के समुद्र, चट्टानों और रेत का वर्णन नहीं किया है, बल्कि उनके बीच उत्पन्न अपनी मानसिक अवस्थाओं को भी व्यक्त किया है। प्रकृति को देखकर उसे विस्मय, रोमांच, शांति, भय, उदासी और आत्मचेतना का अनुभव होता है। इस प्रकार बाहरी दृश्य और आंतरिक भावनाएँ यात्रा-वृत्तांत में एक-दूसरे से जुड़ जाती हैं।

5. सूर्यास्त और सूर्योदय के दृश्यों का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: सूर्यास्त के समय बदलते रंगों ने लेखक को गहराई से प्रभावित किया। सुनहरी रेत और सूर्य का लाल, बैंगनी तथा काला होता रूप उसके मन में सिहरन और उदासी उत्पन्न करता है। सूर्योदय के समय समुद्र और आकाश में फैले रंगों ने वातावरण को सुंदर और जीवंत बना दिया। दोनों दृश्य उसके लिए अविस्मरणीय रहे।

6. 'आखिरी चट्टान तक' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'आखिरी चट्टान तक' शीर्षक पाठ लेखक की यात्रा और लेखक के अनुभव – दोनों को व्यक्त करता है। लेखक कन्याकुमारी में समुद्र के बीच स्थित चट्टान तक पहुँचता है और वहाँ प्रकृति की विराटता को अनुभव करता है। यह चट्टान उसके लिए केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि साहस, खोज, आत्मचेतना और जीवन के गहरे अनुभव का प्रतीक बन जाती है।

=====